इकाई 18 अभिलेखों में प्रयुक्त तिथि अंकन पद्धति एवं प्रमुख संवत् (विक्रमसंवत्, शकसंवत्, गुप्तकाल, हर्षकाल)

इकाई की रूपरेखा

18.0 उद्देश्य

18.1 प्रस्तावना

18.2 तिथि अंकन की परिभाषा

18.3 तिथि अंकन पद्धति

18.3.1 शासन वर्ष या राज्य वर्ष द्वारा तिथि अंकन

18.3.2 संवत् द्वारा तिथि अंकन

18.4 प्रमुख संवत्

18.4.1 विक्रम संवत्

18.4.2 शक संवत्

18.4.3 गुप्त काल

18.4.4 हर्ष काल

18.4.5 मालव संवत्

18.4.6 कृत संवत्

18.5 सारांश

18.6 शब्दावली

18.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

18.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

18.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप–

- तिथि अंकन की परिभाषा के बारें में जान सकेंगे।
- प्रथम शासन वर्ष या राज्य वर्ष द्वारा तिथि अंकन पद्धति के बारें में जान सकेंगे।
- द्वितीय संवत् द्वारा तिथि अंकन कें बारें में जान सकेंगे।
- प्रमुख संवत्, विक्रम संवत्, शक संवत्, गुप्त संवत्, हर्ष संवत् के बारें में जान सकेंगे।
- प्रयुक्त तकनीकि शब्दावली के बारें में जान सकेंगे।

18.1 प्रस्तावना

लेखन के प्रारम्भिक इतिहास में तिथि अंकन की किसी नियमित विधि का प्रयोग नहीं हुआ। भारत में प्राप्त पढ़े गये प्राचीनतम अभिलेख तिथि रहित हैं। अशोक के समय तक तिथि डालने की पद्धति का व्यापक प्रचार नहीं था। अशोक के अधिकांश

अभिलेखों में तिथि नहीं है। इस विधि के परिचय के बाद भी लेखों का तिथि अंकन सर्वव्यापक नहीं बना। अधिकांश अभिलेख लोगों की व्यक्तिगत कृतियाँ हैं। उनमें से अधिकतर तिथि रहित हैं। आधिकरणिक अभिलेखों का भी वर्ग पर्याप्त विस्तृत है, किन्तु इस वर्ग के लिए भी तिथि अंकन अनिवार्य नहीं था। तिथि निर्देश का व्यापक प्रचार ईसा की दूसरी शताब्दी से प्रारम्भ हुआ और भारतीय संवतों के प्रयोग के साथ इसकी वृद्धि होती गई। इस प्रकार **इकाई–18 अभिलेखों में प्रयुक्त तिथि अंकन पद्धति एवं प्रमुख संवत् (विक्रम संवत्, शक संवत्, गुप्तसंवत्, हर्षसंवत्)** के अन्तर्गत तिथि अंकन की परिभाषा एवं पद्धति, शासन वर्ष या राज्य वर्ष द्वारा तिथि अंकन तथा संवत् द्वारा तिथि अंकन तथा प्रमुख संवतों, विक्रम संवत्, शक संवत्, गुप्त संवत्, हर्ष संवत् का अध्ययन किया जायेगा।

18.2 तिथि अंकन की परिभाषा

ग्रीक भाषा के शब्द chronogramको विद्वानों ने इस प्रकार परिभाषित किया है–A chronogram is a sentence or inscription in which specific letters, interpreted as numerals stand for a particular date we rearranged.

18.3 तिथि अंकन पद्धति

अभिलेखों में प्राप्त होने वाली तिथि अङ्कन पद्धति दो प्रकार से प्राप्त होती है–

1. शासन वर्ष या राज्य वर्ष
2. नियमित संवत् का प्रयोग

18.3.1 शासन वर्ष या राज्य वर्ष द्वारा तिथि अंकन

प्राचीन भारतीय अभिलेखों में गणना का आरम्भ राजा के शासन वर्ष से किया गया है। इन अभिलेखों में किसी भी संवत् का प्रयोग दृष्टिगोचर नहीं होता। अशोक के 13वें शिलालेख में उसके 8वें शासनवर्ष का, चौथे शिलालेख में 12वें शासनवर्ष, पंचम स्तम्भलेख में 26वें शासनवर्ष का उल्लेख मिलता है। अशोक ने पंचम स्तम्भ अभिलेख में पूर्णिमा, तिष्यनक्षत्रयुक्त पूर्णिमा, चतुर्दशी, प्रतिपदा, अमावस्या आदि तिथियों का उल्लेख किया है। खारवेल के हाथी गुम्फा अभिलेख में लगभग प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व का अंत में प्रथम शासन वर्ष का उल्लेख है–**'अभिसिततमो पघमे वसे'**अर्थात् राज्याभिषिक्त (सम्राट) के प्रथम शासन वर्ष में या राज्य वर्ष में। सातवाहन अभिलेखों में गोतमीपुत्र शातकर्णी के 18वें एवं 24वें वर्ष का उल्लेख है। (नासिक गुहालेख), हूणनरेश मिहिरकुल के ग्वालियर अभिलेख में 15वें शासनवर्ष का उल्लेख है। शासन वर्ष या राज्य वर्ष से अंकित अभिलेखों में किसी भी प्रचलित कालगणना या संवत् का उल्लेख न होने से कालक्रम निर्धारण शोध का विषय बन जाता है। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि प्रारम्भिक अभिलेखों में तिथि लिखने का प्रचलन नहीं था। इसका कारण संभवतः यह रहा होगा कि प्राचीन भारत में किसी जनप्रिय संवत् का अस्तित्व नहीं था।

18.3.2 संवत् द्वारा तिथि अंकन

उत्कीर्ण अभिलेखों में किसी भी प्रचलित कालगणना या संवत् का उल्लेख न होने से कालक्रम–निर्धारण अनुमान एवं अन्वेषण का विषय बन जाता है। संवत् द्वारा तिथि अंकन अभिलेखों में धीरे–धीरे संवत्, तिथि, दिवस, ऋतु, पक्ष आदि के उल्लेख का

प्रचलन प्रारम्भ हो गया था। सर्वप्रथम उत्तर–पश्चिमी भारत में विदेशी शासकों के सिक्कों व अभिलेखों में नियमित संवत् का प्रयोग दृष्टिगोचर होता है। कुषाण नरेशों की तिथियाँ 3 से 80 तक अंकित हैं और प्रत्येक लेख सम्वत् अथवा संवत्सर से आरम्भ होता है। कुषाण के सामन्त पश्चिमी भारत तथा मथुरा के क्षत्रप शासक भी इसी सम्वत् में अपने लेखों की तिथियां अंकित कराते रहे। उदाहरण के लिए नहपान का जुनार गुहालेख 46वें वर्ष(4678=124ई.) में उत्कीर्ण किया गया। रुद्रदामन के गिरनार अभिलेख में 72 वर्ष का उल्लेख है अर्थात् 150 ई. (727) में यह लेख उत्कीर्ण कराया गया है। गुप्त सम्राटों के अभिलेख भी इसी रुप में उत्कीर्ण हैं। चन्द्रगुप्त द्वितीय का साँची अभिलेख 93 वर्ष में, कुमारगुप्त प्रथम की करमदण्डा शिवलिङ्गप्रशस्ति 117वें वर्ष में, स्कन्दगुप्त का जूनागढ़ लेख 136 वर्ष में उत्कीर्ण किए गए। जिन प्रशस्तियों में तिथियाँ उल्लिखित नहीं होतीं वहाँ समकालिक शासकों की तिथियों के आधार पर काल–निर्धारण किया जाता है। अशोक के तेरहवें शिलालेख में अनेक समकालीन विदेशी शासकों के नाम उल्लिखित हैं। उनकी ज्ञात तिथियों के आधार पर शासक की तिथियों का वास्तविक समय निर्धारित हो जाता है। यवन शासक अन्तियोकस द्वितीय ई.पू. 261–46 तक पश्चिमी एशिया में राज्य करता रहा। द्वितीय टालेमी उत्तरी अफ्रीका में ई.पू. 282–47 तक शासन करता रहा। ये दोनों अशोक के समकालीन थे। इस तिथि 282 में 12 वर्ष अभिषेक के 8वें वर्ष तेरहवाँ लेख खुदवाया गया और अशोक अभिषेक से चार वर्ष पूर्व सिंहासनारुढ हुआ था। इसको घटा देने से ई.पू. 270 वर्ष अशोक के शासक होने की तिथि निश्चित हो जाती है।

18.4 प्रमुख संवत्

इतिहासकारों ने अभिलेखीय तथ्यों के आधार पर यह मत प्रस्तुत किया है कि प्राचीन शकपार्थी संवत् तथा कनिष्क संवत् कालान्तर में क्रमशः विक्रम संवत् तथा शक संवत् के नाम से प्रसिद्ध हुए। प्रारंभिक अभिलेखों में तिथियों के अन्तर्गत दिन का निर्देश करने के लिए दिन की संख्या को ऋतु के आठ पक्षों में से किसी एक से संबन्धित करके दिखाया जाता है। तीन ऋतुओं (ग्रीष्म, वर्षा और हेमन्त) का एक वर्ष माना जाता था और पक्ष द्वारा समय का उल्लेख किया जाता था जैसे वास पखे (वर्षा) हेमन्तान पखे (जाड़ा) या गिहान (गिम्ह) पखे (ग्रीष्म)। प्रत्येक ऋतु के चार मास तथा प्रत्येक मास के दो पक्ष की गणना के द्वारा आठ पक्ष को 'ऋतु' नाम के साथ उल्लेख किया जाता था। यदि ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष 10 के अवसर पर हुई किसी घटना का उल्लेख करना हुआ तो गिम्ह पखे 5 दिवसे 10 अंकित किया जाता था। ग्रीष्म चैत्र से प्रारम्भ होता था इसलिए चैत्र–वैशाख के चार पक्ष तथा ज्येष्ठ प्रथम पक्ष मिलाकर पाँच पक्ष हो जाते हैं इसलिए उससे ज्येष्ठ कृष्ण 10 की तिथि समझी जाती है। शक क्षत्रप युग में पहली सदी से ही भारतीय मास का उल्लेख अभिलेखों में है। बीसलदेव के दिल्ली–टोपरा स्तम्भ अभिलेख में विक्रम संवत् के साथ मास, पक्ष व तिथि का उल्लेख भी है–ओम संवत् 1220 वैशाख शुति (II) (163 ईस्वी) शुक्ल तिथि। शक संवत् शकपार्थी गणना की स्थापना (57 ईसा पूर्व) के पश्चात विदेशी मूल के प्रमुख संवत् (विक्रम संवत्, शक संवत्, गुप्त संवत्, हर्ष संवत्)

18.4.1 विक्रम संवत्

विक्रम संवत् प्राचीन भारत में कालगणना के लिए प्रचलित संवतों में सर्वप्राचीन है जिसका प्रारम्भ 57 ई.पू. माना जाता है। पुरातात्विक साक्ष्य इस संवत् का सम्बन्ध शक–पह्लव शासकों से जोड़ते हैं। पह्लव शासक गोण्डोफर्नीज के तख्ते–बाही

अभिलेख में उल्लिखित वर्ष 103 का सम्बन्ध विक्रम संवत से जोड़ा जाता है। यह अभिलेख पाकिस्तान के पेशावर जिले में अवस्थित युसुफजई क्षेत्र में तख्ते–बाही नामक स्थान से प्राप्त हुआ। यह अभिलेख सर्वप्रथम सिन्ध और सीमावर्ती क्षेत्रों में शक सामन्तों के द्वारा प्रचलित किया गया। मालव इस संवत् को अपने साथ पंजाब से राजस्थान और मध्य भारत में ले आए। विक्रम संवत् को भिन्न–भिन्न कालों में भिन्न–भिन्न नामों से जाना जाता रहा है। इस संवत् के साथ जुड़ा हुआ विक्रम नाम अधिक प्राचीन नहीं है और बाद में जोड़ा गया प्रतीत होता है। इस संवत् के शुरुआती अभिलेख राजस्थान से प्राप्त हुए हैं। इसके कुछ बाद के अभिलेखों में यह मालव जाति से सम्बद्ध हो गया। अन्ततः 8वीं–9वीं शती ई. यह गणना राजा विक्रमादित्य से जुड़ गई। इस संवत् के विकास के विभिन्न चरणों को इस प्रकार निरुपित किया जा सकता है–

1. उदयपुर, राजस्थान से प्राप्त नंदसा यूप अभिलेख की तिथि कृत संवत् 282 है।
2. राजस्थान के ही कोटा जिले से प्राप्त बड़वा–यूप–अभिलेख की तिथि कृत संवत् 295 है।
3. भरतपुर रियासत से मिले विष्णुवर्धन के विजयगढ़ अभिलेख की तिथि 428 कृत संवत् है।
4. नरवर्मा के मन्दसौर अभिलेख की तिथि 461 कृत संवत् है।
5. राजस्थान के नागरी से प्राप्त अभिलेख की तिथि कृत संवत् 481 है।

18.4.2 शक संवत्

यह सम्पूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप का अत्यधिक प्रचलित संवत् है। मथुरा और तक्षशिला के आरम्भिक अभिलेखों में इसे संवत् या संवत्सर, सौराष्ट्र के अभिलेखों में वर्ष और परवर्ती अभिलेखों में शक, शके, शकनृप संवत्सर, शकनृप–कालातीत संवत्सर, शककाल संवत्सर, शकाब्द, शक–शालिवाहन आदि कहा गया है। शक संवत् के उद्भव के सम्बन्ध में अनेक सिद्धान्त प्रचलित हैं। अधिकांश विद्वान् इस मत को स्वीकार करते हैं कि शक संवत् का प्रवर्तक कुषाण वंशी कनिष्क प्रथम था। कनिष्क ने अपने शासन काल की गणना के साथ एक कालगणना का प्रारम्भ किया। तत्पश्चात् उसके उत्तराधिकारियों के द्वारा इस काल गणना का निरन्तर प्रयोग होने के कारण यह नियमित संवत् माना जाने लगा। इस संवत् का प्राचीनतम प्राप्त अभिलेख कनिष्क कालीन सारनाथ बुद्ध प्रतिमा अभिलेख माना गया है–**'महाराजस्य कनिष्कस्य'**(सं. 3 हे. 3 दि 202) अर्थात् महाराज कनिष्क के संवत्सर तीन, हेमन्त मास का तीसरा दिन 22वीं तिथि है। यह अभिलेख सम्राट कनिष्क के शासनकाल के तीसरे वर्ष में ई. 78–ई. 102 के मध्य लिखा गया। इस शासक के उत्तराधिकारियों के अभिलेख 1 से 98 वर्ष में अंकित है और किसी संवत् का नाम न देकर केवल राज्य संवत्सर शब्द का प्रयोग किया गया है। प्राचीन काल में किसी संवत् का नामकरण उसके संस्थापन के साथ ही नहीं होता था। संवत् के लोकप्रिय हो जाने पर ही कोई विशिष्ट नाम उसके साथ जोड़ दिया जाता था और तब वह अन्य प्रचलित गणनाओं से अलग प्रतिष्ठित हो जाता था इसलिए कनिष्क संवत् के प्रारम्भिक अभिलेखों में कोई नाम न देकर केवल 'वर्ष' कहा गया है।

आधुनिक अभिलेखीय प्रमाण इस संवत् का सम्बन्ध बादामी के चालुक्यों के साथ स्थापित करते हैं। षष्ठ या सप्तम शताब्दी के चालुक्य अभिलेखों में शकवर्ष,

शकनृपराज्य अभिषेक–संवत्सर' का उल्लेख है। पश्चिम भारत के शक क्षत्रपों ने जिस काल–गणना का प्रयोग किया है, उसे विद्वानों ने शक गणना ही माना है। शक शासकों ने इस गणना को शककाल, शकाब्द, शक–संवत् नाम दिया। जैन ग्रन्थ प्रभावकचरित में उल्लेख है कि शक लोगों ने अपना संवत् चलाया था। शकों ने विक्रम के उत्तराधिकारी को विक्रमादित्य के 135वें वर्ष में मार डाला, उसी काल से शक–गणना का प्रारम्भ मानते हैं। विक्रम संवत् का स्थापना काल 57 ईसा पूर्व है, इससे 135 घटाने से शककाल 78 ईस्वी सिद्ध हो जाता है। पाँचवी शताब्दी से 12वीं शताब्दी के अभिलेखों में शककाल का प्रयोग प्राप्त होता है। पश्चिमी भारत के क्षहरात शक नहपान के लेख में शक काल प्रयुक्त हुआ है। क्षत्रपों के सिक्कों का भी इसी संवत् से सम्बन्ध है। रुद्रदामन के गिरनार अभिलेख में शक संवत् 72 की तिथि मिलती है जो ईस्वी सन् 150 है। शक क्षत्रप आरम्भ में सामन्त रहें और अपने स्वामी कुषाण राजाओं के काल का प्रयोग करने लगे। उनके द्वारा अधिक प्रयोग होने से यह गणना शक काल के नाम से प्रसिद्ध हो गई।

चालुक्यराज पुलकेशी द्वितीय के ऐहोल अभिलेख में शक संवत् का उल्लेख इन शब्दों में किया गया है–

पंचाशत्सु कलौ काले षट्सु पञ्चाशतासु च।
समासु समतीतासु शकानामपि भूभुजाम्॥

इसमें कलियुग के शक राजाओं के 556 वर्ष(634 ई.) बीत जाने का उल्लेख है। इससे पता चलता है कि कुषाणों द्वारा प्रवर्तित और शकों द्वारा प्रचलित इस संवत् की स्थापना के 500 वर्ष बाद भी शकों द्वारा काल–स्थापना की परंपरा लोगों को पता थी। मध्यकाल के लोग शक संवत् के विदेशी संसर्ग को विस्मृत कर देने के पक्षपाती थे, अतः उसी समय से इस संवत् को भारतीय परम्परा और लोकगाथा में विक्रमादित्य के समान लोकप्रिय वीर शालिवाहन के साथ जोड़ा जाने लगा जोकि संभवतः दक्षिण का प्रसिद्ध सातवाहन राजा था। इस कारण दक्षिण के यादव नरेश कृष्ण के ताम्रपत्र में 1172 शककाल तथा कन्नड़ कृति **उद्भट्ट काव्य** में शालिवाहन शक 1144 का उल्लेख मिलता है।

उज्जैन के प्रसिद्ध ज्योतिर्विद् एवं गणितज्ञ वराहमिहिर ने शककाल का प्रयोग अपने ग्रन्थों में किया है, एवं गुजरात के जैन लेखक भी शक संवत् का प्रयोग करते रहे। इस प्रकार सम्पूर्ण भारत में शक संवत् के प्रयोग की एक सुदीर्घ परम्परा रही है।

18.4.3 गुप्त काल

विक्रम और शक संवत् के समान ही गुप्त संवत् प्राचीन भारत का एक प्रमुख संवत् है। गुप्त शासकों के अधिकांश अभिलेखों और ताम्रपत्रों में हमें तिथियां मिलती हैं। ये तिथियां क्रमानुसार विकासोन्मुखी होती जातीं हैं जिसकी पुष्टि निम्नलिखित सूची से होती है–

शासक	अभिलेख	तिथि
चन्द्रगुप्त द्वितीय	मथुरा का स्तंभलेख उदयगिरि का शैव गुहालेख सांची का प्रस्तर अभिलेख	61 82 93
कुमारगुप्त प्रथम	बिलसद का स्तंभलेख	96

	धनैद का ताम्रलेख करमदण्डा का प्रस्तर अभिलेख दामोदरपुर का ताम्रलेख मनकुंवर का प्रस्तर अभिलेख	113 117 124 128 129
स्कन्दगुप्त	जूनागढ़ का शिलालेख कहौम का स्तंभलेख इन्दौर का ताम्रलेख	136 141 146
कुमारगुप्त द्वितीय	सारनाथ का शिलालेख	154
बुधगुप्त	सारनाथ का शिलालेख दामोदरपुर का ताम्रलेख एरण का प्रस्तर अभिलेख	157 163 165
वैन्यगुप्त	गुणैधर का ताम्रलेख एरण का स्तंभलेख	188 191

इन तिथियों को देखने से प्रतीत होता है कि ये शासकों के शासनवर्ष नहीं हैं, क्योंकि कोई भी शासक है। 188 या 191 वर्षों तक शासन नहीं कर सकता, अतः उपर्युक्त तिथियाँ किसी संवत् विशेष में अंकित जान पड़ती हैं। स्कन्दगुप्त के जूनागढ़ प्रस्तर अभिलेख में कहा गया है गुप्त शासक अपने ही संवत् का प्रयोग करते हैं। इस संवत् को अभिलख में 'गुप्त प्रकाल' कहा गया है। कुमारगुप्त द्वितीय के सारनाथ बौद्ध प्रतिमा लेख में गुप्त संवत् 154 का उल्लेख है। बुद्धगुप्त के सारनाथ बुद्ध प्रतिमालेख में तिथि को स्पष्टतः गुप्त वर्ष में अंकित बताया गया है। गुप्तों के समकालीन कुछ अन्य राजवंश भी इस संवत् का प्रयोग अपने अभिलेखों में करते हैं। उपर्युक्त संदर्भों से ज्ञात होता है कि गुप्त अभिलेखों में अंकित अभिलेख उनके अपने हैं। प्राचीन साक्ष्यों के अभाव में फ्लीट ने इसे गुप्त संवत् स्वीकार करने में सन्देह व्यक्त किया था। उनकी अवधारणा थी कि यह मूलतः लिच्छवियों का संवत् है जिसे गुप्तों ने अपना लिया था। फ्लीट का उपर्युक्त मत अब मान्य नहीं है। गुप्त संवत् के विषय में अलबरुनी का कथन महत्त्वपूर्ण है। उसका कहना है, जहाँ तक गुप्तकाल का प्रश्न है, जनश्रुति के अनुसार, गुप्त लोग क्रूर किन्तु शक्तिशाली थे। जिस समय उनका शासन समाप्त हुआ, उस काल में एक नया संवत् प्रचलित हुआ था। लगता है वलभ उनका अन्तिम नरेश था, क्योंकि वलभ संवत् की भांति गुप्त संवत् भी शक काल के 241 वर्षों उपरान्त आरम्भ हुआ। उपर्युक्त कथन में अनेक विसंगतियां हैं, यथा गुप्त शासक आततायी थे, राजवंश के पतन के बाद संवत् आरम्भ हुआ और गुप्तवंश के अंतिम शासक का नाम वलभ था। इन विसंगतियों के होने पर भी अलबरुनी का यह कथन उचित प्रतीत होता है कि गुप्त तथा वलभी संवत् एक है और उक्त संवत् शक संवत् आरम्भ होने के 241 वर्ष बाद(319 ई.) प्रचलित हुआ। गुप्त राजाओं के अधीन रहे वलभी के मैत्रक शासकों ने स्वतन्त्र होने पर गुप्त–संवत् को ही वलभी संवत् का नाम दे दिया। द्रोणसिंह के ताम्रपट्ट अभिलेख में गुप्त वलभी संवत् 183 तथा धरसेन द्वितीय के मालिया ताम्रपत्र अभिलेख में गुप्त वलभी संवत् 252 उत्कीर्ण है। गुप्त संवत् से सम्बद्ध अंतिम अभिलेख वलभी(गुप्त) संवत् 945(1265ई.) का प्राप्त हुआ। इसके बाद गुप्त संवत् का प्रचलन देखने में नहीं आता।

18.4.4 हर्ष काल

यह संवत् थानेश्वर के राजा हर्ष (श्रीहर्ष, हर्षवर्धन, शीलादित्य) के सिहांसनासीन होने के समय से प्रवर्तित माना जाता है परन्तु किसी लेख में हर्ष का नाम इस संवत् के साथ जुड़ा हुआ अभी तक नहीं मिला। स्वयं राजा हर्ष के दोनों दानपत्रों में भी केवल संवत्' ही लिखा है। अलबरुनी लिखता है कि मैनें कश्मीर के एक पंचांग में पढ़ा है कि श्रीहर्ष विक्रमादित्य से 664 वर्ष पीछे हुआ। यदि अल्बरुनी के इस कथन का अर्थ समझा जाये कि विक्रम संवत् 664 से हर्ष संवत् का प्रारंभ हुआ है तो हर्ष संवत् में 663 जोड़ने से विक्रम संवत् तथा 606–07 जोड़ने से ईसवी सन् होगा।

18.4.5 मालव संवत्

इतिहासकारों के अनुसार भारत विदेशी आक्रमणों से मुक्त होकर 135 वर्ष (57 ईसा पूर्व) से लेकर 78 ईस्वी तक शांति व समृद्धि भोगता रहा। इस काल के पश्चात् शकों ने पुनः आक्रमण करना प्रारम्भ कर दिया। देश में किसी योग्य नेतृत्व के अभाव में संपूर्ण सिंधु, सौराष्ट्र तथा अवंति पर अधिकार कर लिया था। मालव शकों से संघर्ष करते रहे परंतु उनकी शक्ति व यश विच्छिन्न हो चुके थे। कृतयुग की स्थिति परिवर्तित हो जाने के कारण कृत संवत् कानाम मालव संवत् रखकर अपनी नीव दृढ़ करने का प्रयत्न किया। ईस्वी सन् की चतुर्थ पंचम शताब्दी तक मालवशक्ति गुप्त साम्राज्य में विलीन हो गई। गुप्त साम्राज्य की भुजाएँ मालवा, राजपूताना तथा मध्य भारत तक फैल गईं। गुप्त भी मालव संवत् का प्रयोग करते थे।

छठी शताब्दी के कई अभिलेखों में मालव संवत् का प्रयोग दृष्टिगोचर होता है। निम्न अभिलेखों में कृत संवत् का सम्बन्ध मालवगण के साथ स्थापित किया गया है–

मन्दसौर से मिले नरवर्मन् के समय के लेख में–

- **श्रीर्मालवगणाम्नाते प्रशस्ते कृतसंज्ञिते। एकषष्ट्यधिके प्राप्ते समाशतचतुष्ट्ये। प्रावृक्का (ट्का) ले शुभे प्राप्ते'** अर्थात् मालवगण के प्रचलित किए हुए प्रशस्त कृत संज्ञा वाले 461 वें वर्ष के लगने पर वर्षा ऋतु में।
- श्राजपूताना संग्रहालय में रखे हुए नगरी (मध्यमिका, उदयपुर राज्य में) के शिलालेख में **'कृतेषु चतुर्षु वर्षशतेष्वेकाशीत्युत्तरेष्वस्यां मालवपूर्वायां 400 80 1 कार्त्तिकशुक्लपंचम्याम्'** अर्थात् कृत नामक 481वें वर्ष (संवत्) में इस मालव पूर्वा कार्त्तिक शुक्ला पंचमी के दिन'

गुप्तकाल में उज्जयिनी में रहने वाली मालवजाति पर्याप्त सुदृढ़ जाति थी। ईसा पूर्व चौथी शताब्दी में जब सिकंदर ने भारत पर आक्रमण किया तब मालव कबीला पंजाब में रावी तट पर रहता था जो कि ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी तथा प्रथम ईस्वी तक शक पार्थियन् के अधीन था। संभवतः विदेशी दबाव के कारण मालव लोग राजस्थान की ओर चल दिए। जहाँ उनका अस्तित्व ऋषभदत्त (119–123 ईस्वी लगभग) तथा पुराने जयपुर राज्य में नागर स्थान पर हजारों सिक्कों से प्रकाशित होता है जिन पर **'मालवानां जयः'** उत्कीर्ण है। इसके पश्चात् मालव पुराने अवंती और आकरा नामक जनपदों में बस गए होगें जो कि सप्तम् शताब्दी तक मालव नाम से जाने गए। विद्वानों ने इस आधार पर माना है कि मालव जाति कृत अथवा शक पार्थियन् संवत को अपने मौलिक स्थान पंजाब से राजस्थान व मालवा में ले आई थी। इस प्रकार संवत् 461 के बाद 936 तक यह संवत् मालव संवत् कहलाया।

1. 461 के नरवर्मा के मन्दसौर अभिलेख में संवत् का नाम कृत और मालव दोनों है।
2. श्री मालवगणाम्नाते प्रशस्ते कृत संज्ञिते।
3. कुमारगुप्त प्रथम और बन्धुवर्मा के उल्लेख वाले मन्दसौर अभिलेख की तिथि मालव संवत् 493 है।
4. मालवा के राजा यशोधर्मन की मन्दसौर प्रशस्ति में तिथि मालव संवत् 589 अंकित की गई है।
5. मध्यप्रदेश के विदिशा से ग्यारसपुर अभिलेख की तिथि मालव संवत् 936 है।

18.4.6 कृत संवत्

राजपूताना तथा मध्य भारत के अभिलेखों में विक्रम संवत् गणना कृत संवत् के नाम से प्राप्त होता है। यथा इस का प्राचीनतम नाम कृत शब्द मौखरियों के बडवा अभिलेख (सं. 295) विष्णुवर्धन के विजयगढ़ अभिलेख (सं. 428) नरवर्मन् के मन्दसौर अभिलेख (सं. 461) में प्राप्त होता है।

यहाँ प्रयुक्त 'कृत' शब्द का 'क्रीत' अर्थात् खरीदना के अर्थ की पुष्टि करते हुए कहा गया है कि शक पार्थियन क्रूर राजाओं ने प्रजाओं को एक तरह से खरीद लिया था, परंतु यह तर्क मान्य नहीं है। पूर्ववर्ती काल में संवत् के साथ 'विक्रम' नाम के अभाव का कारण यह माना गया है कि वस्तुतः विक्रमादित्य गणप्रमुख ही थे, निरंकुश एक तांत्रिक राजा नहीं थे। यद्यपि मालव संवत् की स्थापना का संपूर्ण श्रेय वे नहीं ले सकते थे। यह संवत् शकों पर मालवों की विजय के उपलक्ष्य में स्थापित किया गया था। शकों के निष्कासन के पश्चात् सुख, वैभव और समृद्धि के काल को कृतयुग कहकर कृत संवत् की सार्थकता सिद्ध की गई है। इस प्रकार नवीं शती ई. से इस संवत् का नाम विक्रम संवत् हो गया।

1. चण्डमहासेन के धौलपुर अभिलेख की तिथि 898 विक्रमकाल (संवत्) है।
2. राष्ट्रकूट शासक विदग्धराज के बीजापुर अभिलेख की तिथि विक्रमकाल 973 है।
3. बोधगया से प्राप्त एक अभिलेख की तिथि विक्रम संवत्सर 1005 है।
4. नरवाहन के एकलिंगजी अभिलेख(राजस्थान) की तिथि विक्रमादित्य संवत् 1028 है।

उर्पयुक्त विवरण से यह स्पष्ट है कि यह कालगणना कृत संवत् के नाम से प्रसिद्ध होकर राजस्थान और मालवा में एक लम्बे समय प्रचलन में रही, कालान्तर में मालवगण से जुड़कर मालव संवत् हो गया। तत्पश्चात् यह संवत् विक्रमादित्य के नाम से जुड़ गया। वैभवपूर्ण काल के (कृतयुग) के कारण इस कालगणना का कृत नाम पड़ा जो आगे चलकर मालवगण के नाम से सम्बन्धित कर दिया। ईसवी चौथी सदी में गुप्त सम्राट चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य ने मालवा और काठियावाड़ के शक–क्षत्रपों को हराकर यह भाग गुप्त साम्राज्य में मिला लिया। पहले शक लोगों को परास्त कर ही यह गणना (सम्वत्) आरम्भ हुई। पुनः उन्ही शकों को गुप्त सम्राट विक्रमादित्य ने पराजित किया। सम्भवतः इसी विजय के स्मरण में प्राचीन सम्वत् का नाम बदलकर विक्रम–सम्वत् कर दिया गया। शकारि चन्द्रगुप्त के विजय का उल्लेख भिलसा के समीप उदयगिरि की गुहालेख में पाया जाता है। मालव, आर्जुनायन तथा यौधेयगण राज्यों को चन्द्रगुप्त के पिता समुद्रगुप्त ने ही नष्ट कर दिया था (प्रयाग प्रशस्ति) विक्रमादित्य द्वारा शकों के पराजित होने पर भी मालवा की जनता मालव सम्वत् का

प्रयोग करती रही। यही कारण है कि कुमारगुप्त को भी मंदसौर वाले लेख में मालवा संवत् का प्रयोग करना पड़ा जबकि उसके अन्य सभी लेख गुप्त संवत् में तिथियुक्त हैं। गणतन्त्र का प्रचलन समाप्त होने के कारण भी मालव संवत् की जगह विक्रम संवत् का प्रयोग होने लगा। राज्यतन्त्र का ही वर्चस्व स्थापित होने पर भारतीय संस्कृति के रक्षक विक्रमादित्य को आदर्श सम्राट मानकर विक्रमी पदवी को प्राचीन सम्वत् के साथ जोड़ दिया गया।

बोध प्रश्न–1

1. निम्नलिखित प्रश्नों के ठीक उत्तरों पर सही (√) का चिन्ह लगाइये।

I. हर्ष संवत् किस राजा के सिंहासनारुढ़ होने पर मनाया जाता है। (श्रीहर्ष/नल)

II. श्रीहर्ष कहाँ के राजा थे। (थानेश्वर/रणथम्मौर)

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

I. गुप्त शासक अपने ही नाम के संवत् का उल्लेख.....अभिलेख मे पाते हैं। (स्कन्दगुप्त का जूनागढ़ प्रस्तर अभिलेख/ गिरनार अभिलेख)

II. विदेशी शासकों के सिक्कों व अभिलेखों में.....प्रयोग दृष्टिगोचर होता है। (नियमित संवत् का/शासनवर्ष का)

III. अशोक के तेरहवें शिलालेख में .....शासनवर्ष का उल्लेख मिलता है। (आठवें/बारहवें)

बोध प्रश्न–2

1. कृतसंवत् को स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

2. विक्रम संवत् को स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

अभ्यास प्रश्न 1

तिथि अंकन पद्धति क्या है, प्रमुख संवत् तिथियों को स्पष्ट कीजिए।

18.5 सारांश

कालगणना तिथि अंकन के लिए भारत में विक्रमसंवत्, गुप्तसवंत्, हर्षसंवत्, मालवसंवत् तथा कृतसंवत् का प्रयोग किया गया है। सर्वाधिक प्राचीन विक्रमसंवत् का प्रारम्भ क्रम ईसा पूर्व माना जाता है। इस प्रकार **इकाई–18 अभिलेखों में प्रयुक्त तिथि अंकन पद्धति एवं प्रमुख संवत् (विक्रम संवत्, शक संवत्, गुप्तसंवत्, हर्षसंवत्)** के अन्तर्गत तिथि अंकन की परिभाषा एवं पद्धति, शासन वर्ष या राज्य वर्ष द्वारा तिथि अंकन तथा संवत् द्वारा तिथि अंकन तथा प्रमुख संवतों, विक्रम संवत्, शक संवत्, गुप्त संवत्, हर्ष संवत् का अध्ययन किया गया।

18.6 शब्दावली

वर्चस्व	–	सत्ता
रक्षक	–	रक्षा करने वाला
सम्राट	–	राजा
वैभवपूर्ण	–	धन धान्य युक्त
अंकन	–	लेखन

18.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- अभिलेखमंजूषा, रणजीत सिंह सैनी, न्यू भारतीय बुक कार्पोरेशन दिल्ली–2000
- उत्कीर्णलेखपंचकम्, झा बन्धु, वाराणसी, 1968
- उत्कीर्णलेखस्तबकम्, जियालाल कम्बोज, ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली
- भारतीय अभिलेख, एस.एस.राणा, भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली, 1978
- भारतीय प्राचीन लिपिमाला, गौरीशंकर, हीराचन्द ओझा, अजमेर, 1918
- प्राचीन भारतीय लिपिशास्त्र और अभिलेखिकी, नारायण, अवध किशोर एवं ठाकुरप्रसाद वर्मा, वाराणसी 1970
- भारतीय पुरालिपि, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, राजबली पाण्डेय, 1978
- भारतीय पुरालिपि शास्त्र, ब्यूलर जार्ज, (हिन्दी अनु.) मंगलनाथ सिंह, मोतीलाल बनारसी दास दिल्ली 1966
- अक्षरकथा, मुले गुणाकर, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, दिल्ली 2003
- लेखनकथा का इतिहास (खण्ड 1–2), ईश्वरचन्द्र राही, हिन्दी संस्थान, लखनऊ, उ.प्र. 1983
- भारतीय पुरालिपि विद्या, डी.सी सरकार, (हिन्दी अनु.) कृष्णदत्त वाजपेयी, विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली, 1996
- भारतीय पुरालेखों का अध्ययन, शिवस्वरूप सहाय, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
- Selected Inscriptions (Vol.1) D.C.Sarkar, Calcutta, 1965
- Indian Chronlogy (Solar, Lunar and Planetary), Pillai, Swami Kannu & K.S. Ramchadran Asian Education Service 2003
- Text Book of Indian Epigraphy, K. Satymurty, Lower Price Publication, Delhi 1992

18.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न–1

1. (i) श्रीहर्ष (ii) थानेश्वर
2. (i) स्कन्दगुप्त का जूनागढ़ प्रस्तर अभिलेख (ii) नियमित संवत् का (iii)आठवें

बोध प्रश्न–2

1. राजपूताना तथा मध्य भारत के अभिलेखों में विक्रम संवत् गणना कृत संवत् के नाम से प्राप्त होता है। यथा इस का प्राचीनतम नाम कृत शब्द मौखरियों के बडवा अभिलेख (सं. 295) विष्णुवर्धन के विजयगढ़ अभिलेख (सं. 428) नरवर्मन् के मन्दसौर अभिलेख (सं. 461) में प्राप्त होता है।

   यहाँ प्रयुक्त 'कृत' शब्द का 'क्रीत' अर्थात् खरीदना के अर्थ की पुष्टि करते हुए कहा गया है कि शक पार्थियन क्रूर राजाओं ने प्रजाओं को एक तरह से खरीद लिया था, परंतु यह तर्क मान्य नहीं है। पूर्ववर्ती काल में संवत् के साथ 'विक्रम' नाम के अभाव का कारण यह माना गया है कि वस्तुतः विक्रमादित्य गणप्रमुख ही थे, निरंकुश एक तांत्रिक राजा नहीं थे। यद्यपि मालव संवत् की स्थापना का संपूर्ण श्रेय वे नहीं ले सकते थे। यह संवत् शकों पर मालवों की विजय के उपलक्ष्य में स्थापित किया गया था। शकों के निष्कासन के पश्चात् सुख, वैभव और समृद्धि के काल को कृतयुग कहकर कृत संवत् की सार्थकता सिद्ध की गई है। इस प्रकार नवीं शती ई. से इस संवत् का नाम विक्रम संवत् हो गया।

   - चण्डमहासेन के धौलपुर अभिलेख की तिथि 898 विक्रमकाल (संवत्) है।
   - राष्ट्रकूट शासक विदग्धराज के बीजापुर अभिलेख की तिथि विक्रमकाल 973 है।
   - बोधगया से प्राप्त एक अभिलेख की तिथि विक्रम संवत्सर 1005 है।
   - नरवाहन के एकलिंगजी अभिलेख (राजस्थान) की तिथि विक्रमादित्य संवत् 1028 है।

   उर्पयुक्त विवरण से यह स्पष्ट है कि यह कालगणना कृत संवत् के नाम से प्रसिद्ध होकर राजस्थान और मालवा में एक लम्बे समय प्रचलन में रही, कालान्तर में मालवगण से जुड़कर मालव संवत् हो गया। तत्पश्चात् यह संवत् विक्रमादित्य के नाम से जुड़ गया। वैभवपूर्ण काल के (कृतयुग) के कारण इस कालगणना का कृत नाम पड़ा जो आगे चलकर मालवगण के नाम से सम्बन्धित कर दिया। ईसवी चौथी सदी में गुप्त सम्राट चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य ने मालवा और काठियावाड़ के शक–क्षत्रपों को हराकर यह भाग गुप्त साम्राज्य में मिला लिया। पहले शक लोगों को परास्त कर ही यह गणना (सम्वत्) आरम्भ हुआ। पुनः उन्हीं शकों को गुप्त सम्राट विक्रमादित्य ने पराजित किया। सम्भवतः इसी विजय के स्मरण में प्राचीन सम्वत् का नाम बदलकर विक्रम–सम्वत् कर दिया गया। शकारि चन्द्रगुप्त के विजय का उल्लेख भिलसा के समीप उदयगिरि की गुहालेख में पाया जाता है। मालव, आर्जुनायन तथा यौधेयगण राज्यों को चन्द्रगुप्त के पिता समुद्रगुप्त ने ही नष्ट कर दिया था (प्रयाग प्रशस्ति) विक्रमादित्य द्वारा शकों के पराजित होने पर भी मालवा की जनता मालव सम्वत् का प्रयोग करती रही। यही कारण है कि कुमारगुप्त को भी मंदसौर वाले लेख में मालवा संवत् का प्रयोग करना पड़ा जबकि उसके अन्य सभी लेख गुप्त संवत् में तिथियुक्त हैं। गणतन्त्र का प्रचलन समाप्त होने के कारण भी मालव संवत् की जगह विक्रम संवत् का प्रयोग होने लगा। राज्यतन्त्र का ही वर्चस्व स्थापित होने पर भारतीय संस्कृति के रक्षक विक्रमादित्य को आदर्श सम्राट मानकर विक्रमी पदवी को प्राचीन सम्वत् के साथ जोड़ दिया गया।

2. विक्रम संवत् प्राचीन भारत में कालगणना के लिए प्रचलित संवतों में सर्वप्राचीन है जिसका प्रारम्भ 57 ई.पू. माना जाता है। पुरातात्विक साक्ष्य इस संवत् का सम्बन्ध शक–पह्लव शासकों से जोड़ते हैं। पह्लव शासक गोण्डोफर्नीज के तख्ते–बाही अभिलेख में उल्लिखित वर्ष 103 का सम्बन्ध विक्रम संवत से जोड़ा जाता है। यह अभिलेख पाकिस्तान के पेशावर जिले में अवस्थित युसुफजई क्षेत्र में तख्ते–बाही नामक स्थान से प्राप्त हुआ। यह अभिलेख सर्वप्रथम सिन्ध और सीमावर्ती क्षेत्रों में शक सामन्तों के द्वारा प्रचलित किया गया। मालव इस संवत् को अपने साथ पंजाब से राजस्थान और मध्य भारत में ले आए। विक्रम संवत् को भिन्न–भिन्न कालों में भिन्न–भिन्न नामों से जाना जाता रहा है। इस संवत् के साथ जुड़ा हुआ विक्रम नाम अधिक प्राचीन नहीं है और बाद में जोड़ा गया प्रतीत होता है। इस संवत् के शुरुआती अभिलेख राजस्थान से प्राप्त हुए हैं। इसके कुछ बाद के अभिलेखों में यह मालव जाति से सम्बद्ध हो गया। अन्ततः 8वीं–9वीं शती ई. यह गणना राजा विक्रमादित्य से जुड़ गई। इस संवत् के विकास के विभिन्न चरणों को इस प्रकार निरुपित किया जा सकता है–

- उदयपुर, राजस्थान से प्राप्त नंदसा यूप अभिलेख की तिथि कृत संवत् 282 है।
- राजस्थान के ही कोटा जिले से प्राप्त बड़वा–यूप–अभिलेख की तिथि कृत संवत् 295 है।
- भरतपुर रियासत से मिले विष्णुवर्धन के विजयगढ़ अभिलेख की तिथि 428 कृ त संवत् है।
- नरवर्मा के मन्दसौर अभिलेख की तिथि 461 कृत संवत् है।
- राजस्थान के नागरी से प्राप्त अभिलेख की तिथि कृत संवत् 481 है।

अभ्यास प्रश्न–

इस प्रश्न का उत्तर विद्यार्थी स्वयं लिखें।